बालविज्ञान प्रस्तुत

दादा भगवान

भाग-५

चित्रकथा

प्रस्तावना

'दादा भगवान' वर्तमान युग के अद्वितीय आत्मज्ञानी पुरुष थे। उन्हें बचपन से ही आत्मा को पहचानने की, परम तत्व को प्राप्त करने की लगन थी। रोज़मर्रा के जीवन में होनेवाली घटनाओं का वे वैज्ञानिक तरीक़े से विश्लेषण करते थे, उनके पीछे रही हुई पुरानी भ्रामक लौकिक मान्यताओं से दूर रहकर वे सच्ची समझ को अपनाते थे। तार्किक प्रश्नावलियों द्वारा चिंतन करके दुनिया की पज़ल सोल्व करने का उन्होंने अद्‌भुत तरीक़ा अपनाया था। उनके गृहस्थ जीवन की और व्यवसायिक जीवन की कितनी ही प्रेरणादायक घटनाएँ उनके ऐसे ही संशोधक हृदय को प्रतिबिम्बित करती हैं।

सभी के लिए दादा भगवान की बातें जीवन जीने की कला सीखने के लिए बहुत सुंदर दिशानिर्देष करेंगी और जीवन के ध्येय को समझने की प्रेरणा देंगी। यह पुस्तक हमें उनके प्रेरणादायक जीवन की घटनाओं का हृदयस्पर्शी परिचय करवाती है।

दादा भगवान के जीवन की घटनाओं को उनके ही श्रीमुख से निकली हुई वाणी में से लेकर उसी रूप में चित्रांकित करने के प्रयत्न किए गए हैं। आपको इस पुस्तिका में चित्र या लेखांकन में कोई भी त्रुटि लगे तो वह संकलनकर्त्ता की है। ऐसी कोई भी कमी रह गई हो तो उसके लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

– जय सच्चिदानंद

प्रकाशक :
श्री अजीत सी. पटेल
महाविदेह फाउन्डेशन
५, ममतापार्क सोसाइटी, नवगुजरात कॉलेज के पीछे,
उस्मानपुरा, अहमदाबाद-३८००१४, गुजरात, भारत
फोन : (०७९) २७५४०४०८

मुद्रक :
महाविदेह फाउन्डेशन
पार्श्वनाथ चेंम्बर्स, नई रिज़र्व बैंक के पास,
इन्कमटेक्स, अहमदाबाद-३८००१४, गुजरात, भारत
फोन : (०७९) २७५४२९६४

प्राप्ति स्थान :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाइवे, अडालज
जिला-गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात-भारत
फोन: (०७९) ३९८३००३४

email : balvignan@dadabhagwan.org
website : www. dadabhagwan.org
kids.dadabhagwan.org

प्रथम आवृत्ति : २००० कॉपी दिसम्बर २०१४
मूल्य : भारत रु.४५

© : All Rights Reserved - Mahavideh Foundation
Address as above

दादा भगवान सचित्र भाग - ५

"दादा भगवान" के नाम से प्रसिद्ध हुए अंबालाल मूलजी भाई पटेल के जीवन में कई तरह के संजोग आए और अलग-अलग तरह के अनुभव हुए.....

अंबालाल भाई के एक भतीजे प्रभुदास शिवा भाई आफ्रीका में रहते थे। और उनके भतीजे भीखा भाई बड़ौदा में नोकरी करते थे। जब भी प्रभुदास भाई आफ्रीका से भारत आते थे, तब बड़ौदा में भीखा भाई के घर पर ही ठहरते।

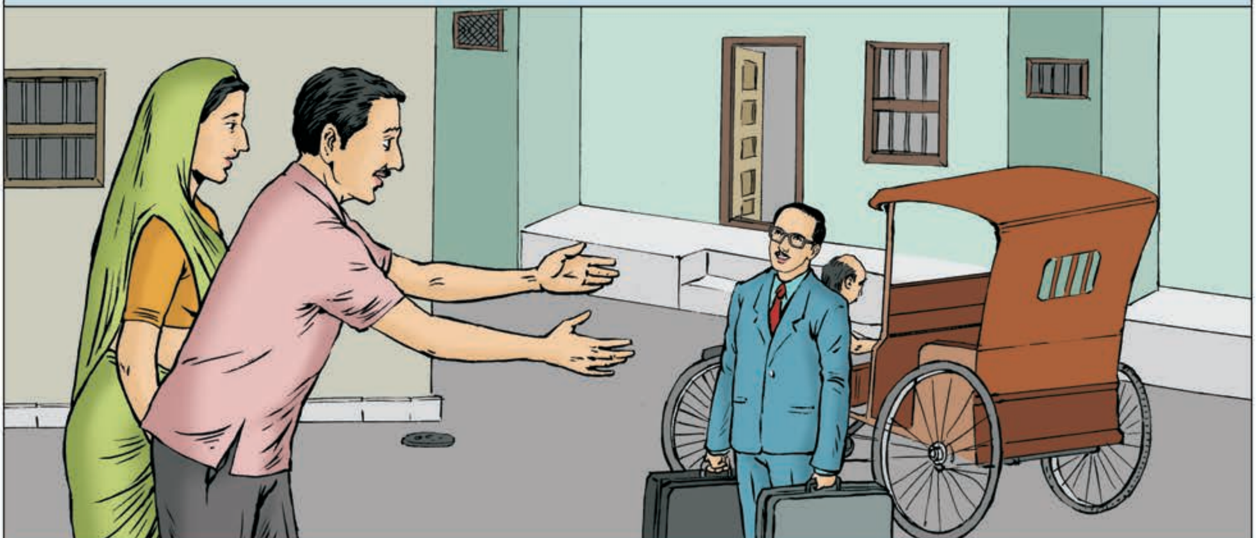

भीखा भाई के पिताजी का देहांत हो चुका था। वैसे तो प्रभुदास भाई अपने भतीजे भीखा भाई से लगभग पाँच साल ही बड़े थे, लेकिन चाचा के तौर पर वे भीखा भाई पर काफी रौब जमाते थे और उनकी छोटी-छोटी बातों पर उनकी कमियाँ निकालकर झिक-झिक करते रहते थे।

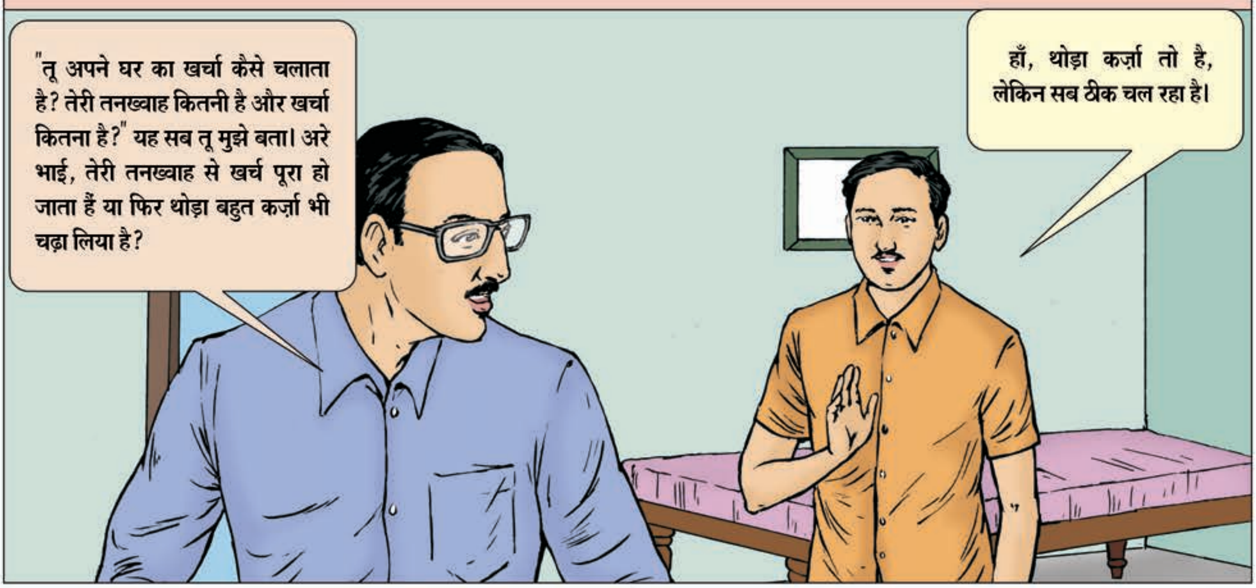

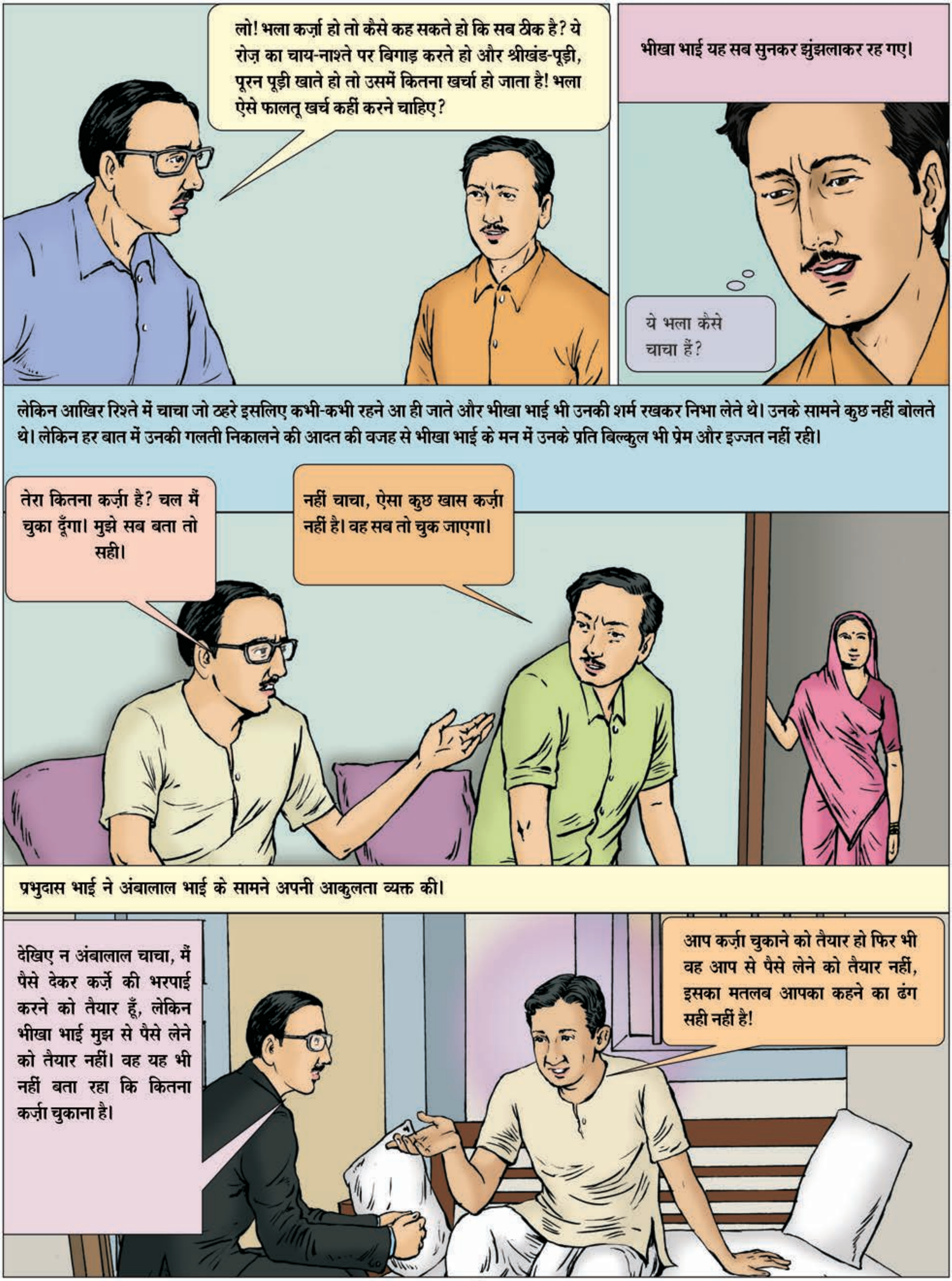
लो! भला कर्ज़ा हो तो कैसे कह सकते हो कि सब ठीक है? ये रोज़ का चाय-नाश्ते पर बिगाड़ करते हो और श्रीखंड-पूड़ी, पूरन पूड़ी खाते हो तो उसमें कितना खर्चा हो जाता है! भला ऐसे फालतू खर्च कहीं करने चाहिए?
भीखा भाई यह सब सुनकर झुंझलाकर रह गए।
ये भला कैसे चाचा हैं?
लेकिन आखिर रिश्ते में चाचा जो ठहरे इसलिए कभी-कभी रहने आ ही जाते और भीखा भाई भी उनकी शर्म रखकर निभा लेते थे। उनके सामने कुछ नहीं बोलते थे। लेकिन हर बात में उनकी गलती निकालने की आदत की वजह से भीखा भाई के मन में उनके प्रति बिल्कुल भी प्रेम और इज्जत नहीं रही।
तेरा कितना कर्ज़ा है? चल मैं चुका दूँगा। मुझे सब बता तो सही।
नहीं चाचा, ऐसा कुछ खास कर्ज़ा नहीं है। वह सब तो चुक जाएगा।
प्रभुदास भाई ने अंबालाल भाई के सामने अपनी आकुलता व्यक्त की।
देखिए न अंबालाल चाचा, मैं पैसे देकर कर्ज़े की भरपाई करने को तैयार हूँ, लेकिन भीखा भाई मुझ से पैसे लेने को तैयार नहीं। वह यह भी नहीं बता रहा कि कितना कर्ज़ा चुकाना है।
आप कर्ज़ा चुकाने को तैयार हो फिर भी वह आप से पैसे लेने को तैयार नहीं, इसका मतलब आपका कहने का ढंग सही नहीं है!

ऐसा? मुझसे क्या गलती हो रही है?
आप उसके चाचा बनकर बैठे हो, यही आपकी गलती है। आप उस पर रौब झाड़ते हो उसी से वह काफी त्रस्त है ! कभी आपके चाचा के डाँटने पर आपको दुःख हुआ होगा तो, चाचा बनकर आप किसी को कैसे डाँट सकते हैं? उसे भी दुःख होगा, ऐसा नहीं सोचा?
लेकिन पैसें लेने को भी मना कर रहा है?
आप से अगर प्रेम न मिले, तो फिर आपको कुछ कैसे बताएगा? देखना; मुझ से कैसे बात करता है वह!
अंबालाल भाई ने भीखा भाई को अपने पास बुलाया।
अरे भीखा भाई, क्या आप पर कुछ कर्ज़ा है अभी?
हाँ दादा, थोड़ा बहुत है। करीब सोलह-सत्रह सौ होगा, लेकिन वह तो मैं धीरे-धीरे चुका दूँगा।
भीखा भाई के जाने के बाद प्रभुदास ने आश्चर्य व्यक्त किया।
अंबालाल चाचा ! आपके पास बात निकलवाने की ज़रूर कोई तरकीब है! यह आदमी मेरे सामने कुछ नहीं बोला और आपको उसने सारी बातें बता दीं।
इसमें कोई तरकीब या जादू नहीं है, ऐसा है कि वह मुझ से दो-तीन साल छोटा है और रिश्ते में मैं उसका दादा हूँ। ये बच्चे बड़े ही प्यार से मुझे "दादा, दादा" बुलाते हैं। तब मुझे मन पर बोझ लगने लगा और मुझ पर उनका उपकार भी चढ़ता गया। अरे! मैं दादा तो बना लेकिन कभी इनका कोई काम तो मैंने किया ही नहीं, तो बोझ तो बढ़ेगा ही न?

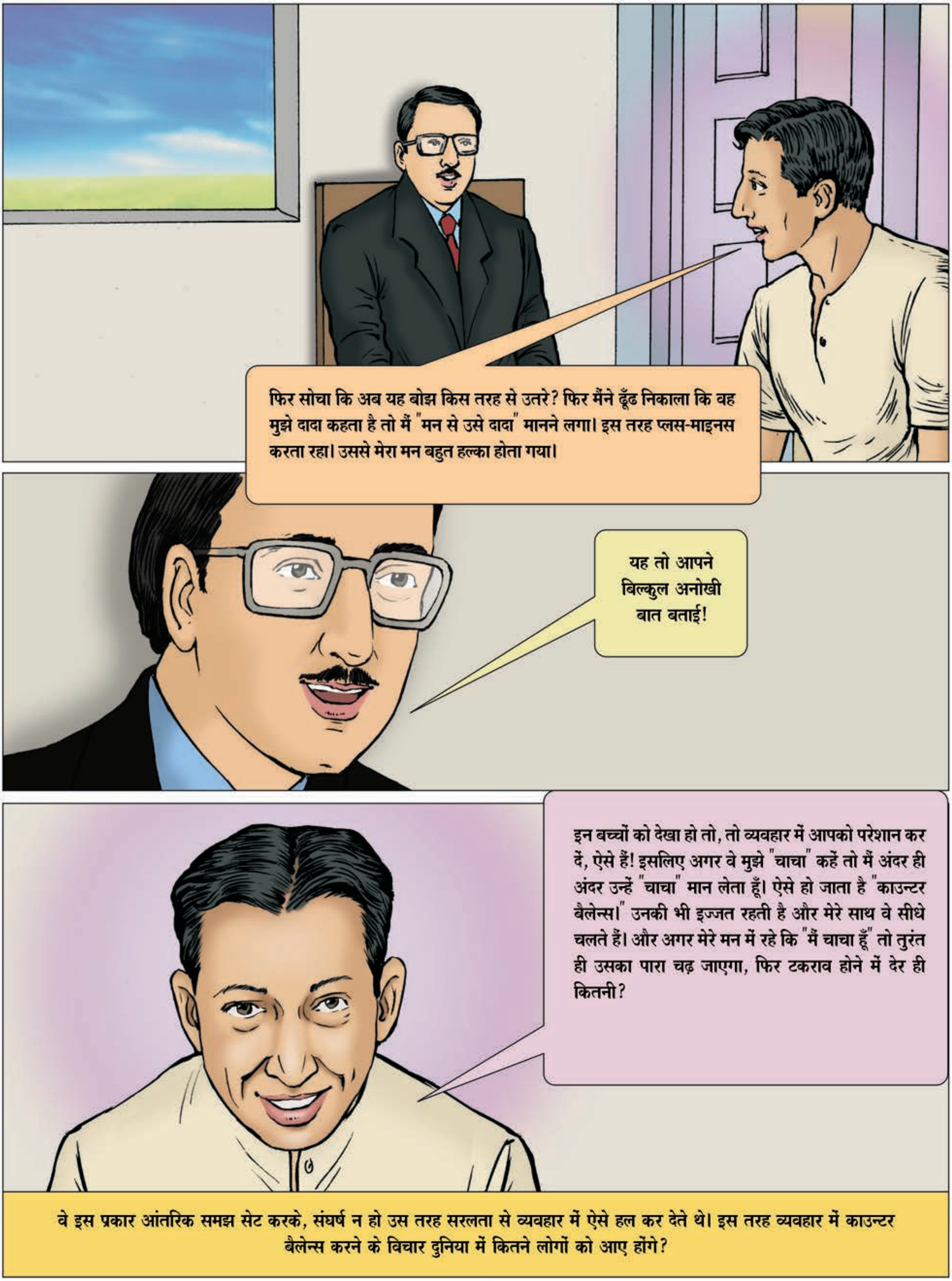
फिर सोचा कि अब यह बोझ किस तरह से उतरे? फिर मैंने ढूँढ निकाला कि वह मुझे दादा कहता है तो मैं "मन से उसे दादा" मानने लगा। इस तरह प्लस-माइनस करता रहा। उससे मेरा मन बहुत हल्का होता गया।
यह तो आपने बिल्कुल अनोखी बात बताई!
इन बच्चों को देखा हो तो, तो व्यवहार में आपको परेशान कर दें, ऐसे हैं! इसलिए अगर वे मुझे "चाचा" कहें तो मैं अंदर ही अंदर उन्हें "चाचा" मान लेता हूँ। ऐसे हो जाता है "काउन्टर बैलेन्स।" उनकी भी इज्जत रहती है और मेरे साथ वे सीधे चलते हैं। और अगर मेरे मन में रहे कि "मैं चाचा हूँ" तो तुरंत ही उसका पारा चढ़ जाएगा, फिर टकराव होने में देर ही कितनी?
वे इस प्रकार आंतरिक समझ सेट करके, संघर्ष न हो उस तरह सरलता से व्यवहार में ऐसे हल कर देते थे। इस तरह व्यवहार में काउन्टर बैलेन्स करने के विचार दुनिया में कितने लोगों को आए होंगे?

अंबालाल भाई को जब भी कहीं बाहर जाना होता तो ज्यादातर उनके सगे-संबंधी उन्हें स्टेशन तक छोड़ने जाते। मुंबई से बड़ौदा जाने के लिए रात की ट्रेन ही ठीक रहती थी। रात को मुंबई से ट्रेन निकलती और दूसरे दिन सुबह बड़ौदा पहुँच जाती। मुंबई स्टेशन पर जैसे ही अंबालाल भाई ट्रेन में चढ़ते, तब उनके संबंधी ट्रेन में उनका बिस्तर लगा देते थे और जैसे ही ट्रेन चलने लगती तब वे सभी "अंबालाल चाचा, आईएगा" कहते-कहते नीचे उतर जाते।

ट्रेन के चलते ही थोड़ी ही देर में खिड़की में से सभी सगे-संबंधी दिखने बंद हो जाते हैं। सामान्य जन तो काफी समय तक पीछे छूटे हुए सगे संबधियों को ही याद करके अपना वक्त बिताते हैं। फिर उसके बाद उनका स्टेशन आने के बहुत पहले से ही, इन्हीं विचारों में खोये रहते हैं, वहाँ जाकर क्या करना है, किससे मिलना है।

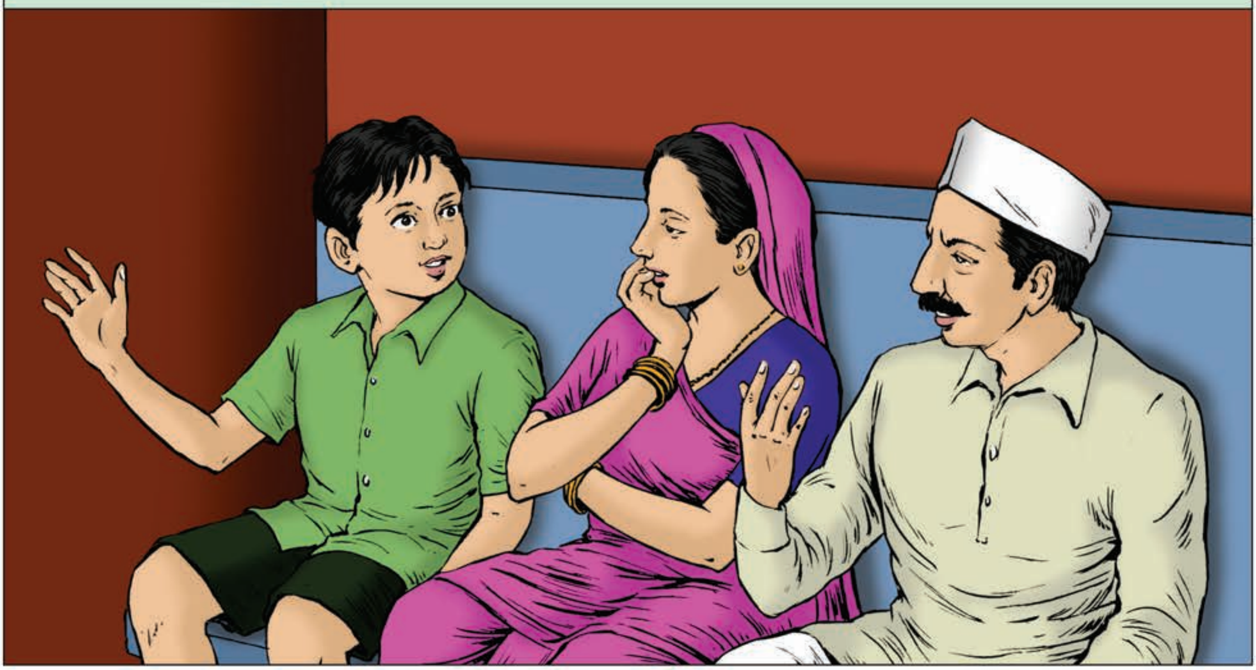

लेकिन अंबालाल भाई तो असामान्य पुरुष थे, किसी और ही मिट्टी से बने हुए मानव! उन्हें तो हर कोई संयोग बंधन रूप लगता था। वे हमेशा मुक्तता का अनुभव करना चाहते थे। इसलिए जैसे ही मुंबई छूटता और स्टेशन के लोग दिखाई देने बंद हो जाते कि वे "उन लोगों के संयोग और बंधन से मुक्त हुआ" ऐसा मानकर चैन की साँस लेते थे। दूसरी तरफ बड़ौदा अभी तक आया नहीं तो, वहाँ के लोगों का संयोग और बंधन की शुरूआत नहीं हुई होती थी।

इस तरह के प्रसंगों में उनके अंदर मनोमंथन चलता कि एक जगह से छूट गए और दूसरा बंधन अभी तक आया नहीं। तब उतने समय के लिए यदि मुक्तता का अनुभव होता है तो हमेशा की मुक्ति का आनंद कैसा होगा! जब भी दो काम के बीच में जो अंतराल आए तब जीवन में मुक्तता का आनंद का अनुभव करना चाहिए? एक संयोग पूरा हो गया और दूसरा अभी तक आया नहीं है, तो उतने समय के लिए मोक्ष की अनुभूति कर लो!

अंबालाल को किसी एक वकील का अलग ही तरह का अनुभव हुआ। उनकी जान-पहचानवाले एक भाई ने एक केस किया था। उसके लिए वे वकील के पास जाकर आए और अंबालाल भाई से मिले।
अंबालाल भाई, आज तो बहुत ही खराब अनुभव हुआ।
क्या हुआ? कहाँ जाकर आए हो? आपका चेहरा क्यों लटका हुआ है?
मैंने एक कानूनी केस किया है, जिसके लिए एक वकील से मिलना था। साढ़े नौ बजे का अपॉइन्टमेन्ट था, लेकिन मैं वहाँ थोड़ी देर से पहुँचा। वकील ने तो मुझे देखते ही सुना दिया कि "आप बिल्कुल बेअक्ल हो! मिलने का समय तो साढ़े नौ का था। आप क्यों पंद्रह मिनट देर से आए? इस तरह देर से आओगे तो नहीं चलेगा? असीलों के साथ मेरे और कितने अपॉइन्टमेन्ट्स हैं, बिल्कुल गधे जैसे हो! मेरा पूरा समय खराब कर दिया, समय का कुछ भान है या नहीं?"
अरे बाप रे! ऐसे खराब शब्द कहे? वकील होकर ऐसा बोलना क्या अच्छा लगता है?

और फिर हैं भी बहुत बड़े वकील? कुछ सभ्यता तो होनी चाहिए न! और केस तो न जाने जीतेंगे या नहीं, उसका क्या पता? उससे पहले ही इतनी गालियाँ खानी पड़ीं!
आप वकील को फीस देते हो बदले में वह आपको गालियाँ देता है।
मैं तो सुनकर दंग ही रह गया! कितना खराब बर्ताव किया!
घबराना मत। उस वक्त आपको वकील से ऐसा कहना चाहिए कि, साहब आपके और मेरे बीच फीस की कंडीशन है। मैं आपको फीस दूँगा और आप केस लड़ेंगे, इतनी ही कंडीशन है। गालियाँ वगैरह की कोई कंडीशन नहीं है। ऐसे गाली देकर आपने एक्स्ट्रा आइटम डाल दिया। उस एक्स्ट्रा के बदले में मैं दावा करूँगा!
आपकी तरह हाज़िर जवाबी का सूझ मुझ में नहीं है न!
लेकिन कोर्ट में नहीं जाना पड़े, वही उत्तम रास्ता। जो समझदार इंसान होता है, वह कोर्ट में नहीं जाता। "जिस चीज़ के लिए दावा करना है, वह चीज़ वास्तव में मेरी होगी, उसका मेरे साथ ऋणानुबंध होगा तो मुझे वापस मिल ही जाएगी," ऐसा भरोसा रखना चाहिए। "यदि ऋणानुबंध नहीं होगा तो वापस मिलेगी ही नहीं। लाख कोशिश करोगे, लाख केस करोगे फिर भी!" इतना यदि एक्ज़ेक्ट समझ लो तो कोर्ट की किच-किच से छूट जाओगे!

फीस के थोड़े पैसे पहले से ही दे दिए ताकि उनका काम वे जल्दी पूरा कर दे। कुछ दिनों तक उनके वकील से कोई संदेशा नहीं आया, इसलिए वे भाई वापस वकील के पास गए।
वकील साहब, मेरा केस कहाँ तक पहुँचा?
कौन सा केस? ...ओह! लेकिन अभी उसकी बारी नहीं आई है, थोड़ा टाइम लगेगा।
साहब थोड़ा जल्दी करवाओ न! मुझे छः महीने बाद शहर से बाहर जाना है। यदि उससे पहले सब पूरा हो जाए तो अच्छा है।
कहा न एक बार कि मेरे पास टाइम नहीं है।
साहब, मेरा केस जल्दी लो तो अच्छा है। यदि ऐसा नहीं हो सके तो मेरे केस के कागज़ात मुझे वापस दे दीजिए। मेरे एडवान्स पैसे नहीं देंगे तो चलेगा।
ऐसा सुनकर वकील ने अपने कमरे में बाँधे हुए कुत्ते की ओर इशारा कर के कहा -
यहाँ से जा रहे हो या नहीं? वर्ना कुत्ते से कटवाऊँगा!
आखिर में बड़ी मुसीबत उठाकर अंबालाल भाई की मदद से समझा-बुझाकर वकील से केस के कागज़ वापस लिए और एडवान्स पैसे तो छोड़ने ही पड़े!
दुनिया का व्यवहार भी कैसा है! देखो न, वकील मुवक्किलों से पैसा भी लेते हैं और गालियाँ भी सुनाते हैं! पूरे संसार का व्यवहार ऐसा ही है! जब कोई व्यक्ति मुसीबत में हो, तब उसे परेशान करना चाहिए या मदद करनी चाहिए? अगर परिस्थिति को समझकर व्यवहार करें, भी वह इंसानियत कहलाती है!

हर एक व्यक्ति को जीवन में अलग-अलग संजोगों का सामना करना पड़ता है, बहुत बार बेहद जटिलतावाले संजोग भी होते हैं, जिन्हें सफलतापूर्वक पार करने के लिए खुद की सूझ होनी बहुत ज़रूरी है और कई बार सिर्फ कोमनसेन्स की! ★

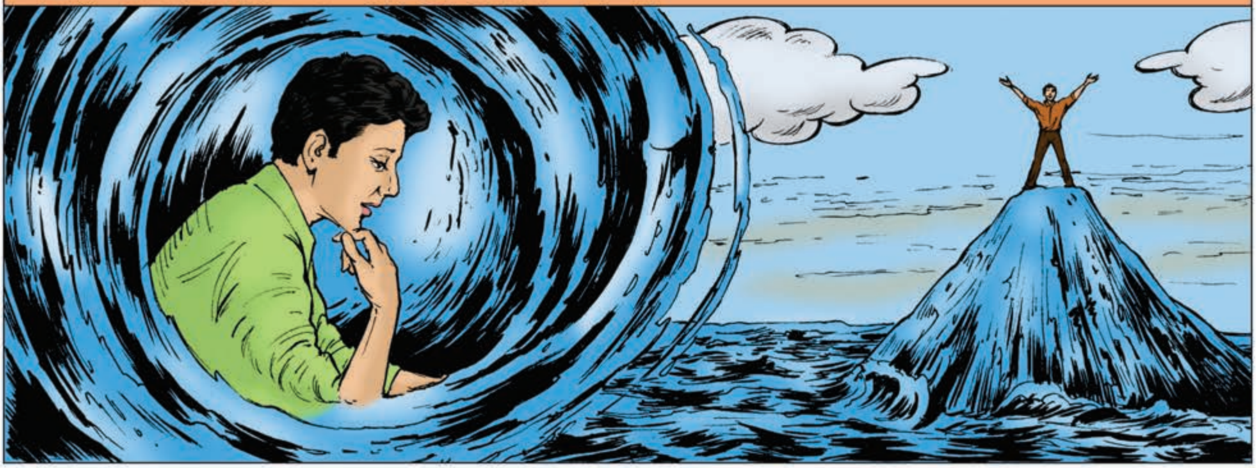

कॉन्ट्रैक्ट के काम के सिलसिले में उन्हें एक जगह से हो कर जाना था। उस वक्त उन्होंने अपना पसंदीदा लोंग कोट पहना था। इस जगह के बारे में उन्हें पता नहीं था।

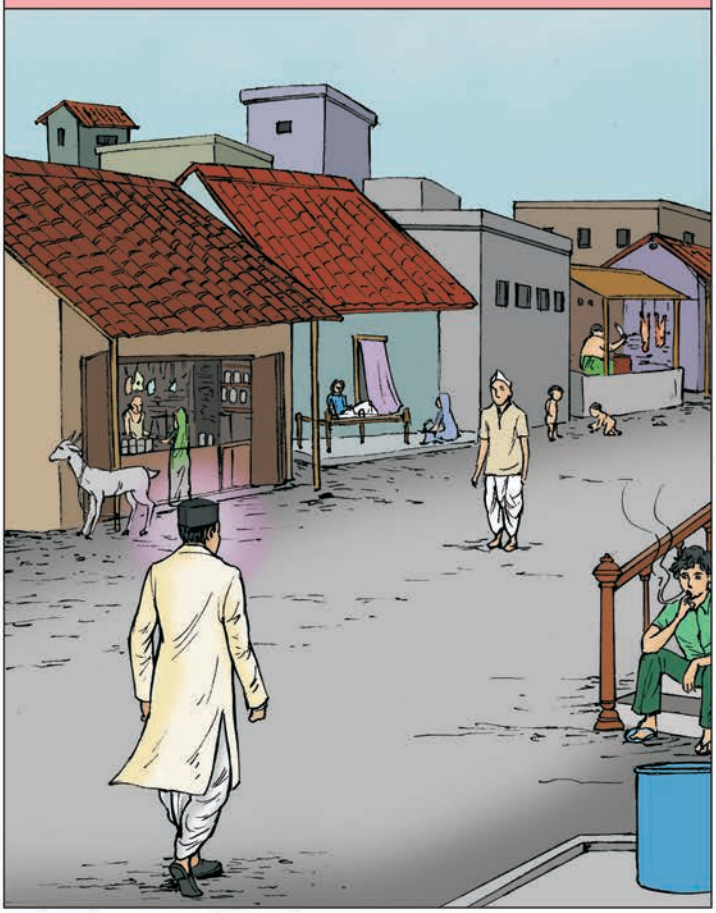

रौब से चलते आदमी को देख

★ कॉमन सेन्स - सामान्य विवेक बुद्धि

ये लोग मुझे संदेह भरी नज़रों से क्यों देख रहे हैं?
ज़रा वह बैलगाड़ी हाँकनेवाला डंडा तो लाना।
ओ बाप रे! यह तो बुरे फँसे! यह इलाका अच्छा नहीं लगता। कहीं इन्होंने मुझे डंडा मारा तो मैं क्या करूँगा? मैं तो सिर्फ यहाँ से गुज़र रहा था, इन लोगों से कुछ कहा भी नहीं, फिर भी ऐसा कह रहे हैं! इनका कोई भरोसा नहीं है। अब भागो यहाँ से...
उस वक्त भागने के अलावा और कुछ न सूझा, वैसे तो अन्य कितनी ही परिस्थितियों में उन्होंने नाटक करके अपना काम निकाल लिया था।
समय-संजोग के अधीन उस समय अंबालाल भाई को भागने में "छोटेपन" का कोई एहसास नहीं हुआ और अपना कुछ भी नुकसान किए बगैर अपने आप को बचा लिया। हर बार बुद्धि से हल नहीं आता। कई बार सिर्फ कोमनसेन्स की ज़रूरत होती है। इसलिए परिस्थिति के अधीन निर्णय लेना पड़ता है।

एक बार अंबालाल भाई अपने भागीदार के घर गए। तब उनकी बेटी पलंग पर लेटी हुई थी।
अरे, तू क्यों इतनी कमज़ोर लग रही है? उसे कुछ हुआ है?
पिछले छह महीनों से हमेशा हल्का बुखार रहता है। डॉक्टरों से बहुत इलाज करवाया लेकिन बुखार ठीक नहीं हो रहा।
ऐसा बुखार उतारने का तरीका मुझे मालूम है। किराने की दुकान से कड़ु-कड़ियातु (आर्युवेदिक दवाई) मंगवाकर, कूटकर, चूरण तैयार करवाओ। मैं दोपहर को आऊँगा, तब इसे वह दवाई पिला दूँगा....
दोपहर...
बेटा, देख तेरे लिए दवाई बनाई है, तू पी ले इसे।
नहीं चाचा जी, यह तो बहुत कड़वी होती है, मैं यह नहीं पीऊँगी।
देख, मैं भी तेरे साथ यह दवाई पीऊँगा, हम दोनों साथ में पीएँगे।
उ,उ,उ, नहीं चाचा जी, मुझ से नहीं पी जाएगी।

नहीं, यों मना नहीं करते। तू देख तो सही, मैं कैसे पीता हूँ!
अंबालाल भाईने उसके हाथ में एक प्याली पकड़ाई और एक प्याली खुद के हाथ में रखी, फिर उसी में से एक घूँट लेकर मुँह में कुछ देर ऐसे घुमाया जैसे दूध का घूँट हो। बेटी तो आश्चर्य से अंबालाल भाई को देखती रही।
अरे चाचा जी, आपने दवाई मुँह में भरकर रखी, फिर भी आपको कुछ नहीं हुआ?
इससे क्या होगा? इसे तो दूध की तरह पी जाना चाहिए!
उसने देखा कि चाचाजी को ना तो दवाई कड़वी लगी और ना ही उन्होंने मुँह बिगाड़ा। इसलिए उसने भी अपनी प्याली मुँह से लगाई और सारी दवाई पी गई। मार-पिटकर पिलाने से बच्चा घबरा जाता है। जबकि चाचाजी ने तो खेल-खेल में ही विश्वास पैदा किया और उसे अपनी मरजी से ही दवाई पीना सिखा दिया।
दूसरी बार भागीदार के बेटे को भी बुखार हो गया। वह भी दवाई पीने के लिए आनाकानी कर रहा था।
मुझ से यह दवाई नहीं पी जाएगी। बहुत कड़वी है। उल्टी हो जाएगी।
देख, ऐसा डर नहीं रखना चाहिए। "मुझे कड़वी दवाई पीने की शक्ति दीजिए।" पाँच बार ऐसा बोलकर पी जाओ, कुछ नहीं होगा।

भागीदार का बेटा अंबालाल भाई के कहे अनुसार पाँच बार ऐसा बोलकर दवाई पी गया।
अभी उल्टी हो जाएगी।
नहीं होगी! ऐसा उल्टा मत सोचो, पॉज़िटिव ही रहो कि इस दवाई से बुखार ठीक होगा ही। देख, तूने शक्ति माँगी तो दवाई पी सका या नहीं? (ज्ञान के बाद की घटना है)
एक बार अंबालाल भाई किसी परिचित के घर गए। वहाँ किसी के साथ खाना खाने बैठे। उस व्यक्ति के ससुर जी खाना परोस रहे थे, उन्होंने अंबालाल भाई की थाली में लापसी परोसी, लेकिन अपने जमाई की थाली में नहीं।
उन्हें भी लापसी परोसिये।
ये तो बचपन से मीठा खाते ही नहीं।
पाटीदार का बेटा होकर मीठा खाए बगैर कैसे रह सकता है?
मैं बत्तीस साल का हूँ लेकिन आज तक मीठा नहीं खाया।

ऐसा कहीं चलता है? मेरी मौजूदगी में मेरे साथ खाना खाने बैठे हो तो थोड़ा तो मीठा खाना ही पड़ेगा।
जमाई घबराया कि अब ये ज़ोर ज़बरदस्ती करेंगे
मुझसे डरो मत!! हम ज़बरदस्ती नहीं करते, हम तो प्रेम से खिलाते हैं।
देखो जैसा मैं कहता हूँ वैसा बोलो - "हे भगवान, मुझे मीठा खाने की शक्ति दीजिए।" इस प्रकार बोलकर शक्ति माँगो।
उस जमाई ने ग्यारह बार इस वाक्य को दोहराया और फिर थोड़ी लापसी खायी। उसके बाद तो वह रोज़ लापसी खाने लगे। उसके बाद उस व्यक्ति के ससुर रोज़ आ कर कह जाते...
मेरे जमाई तो रोज़ लापसी खाने लगे हैं!
एक बार ऐसी गाँठ मन में बाँध ली कि "मीठा नहीं खाऊँगा" तो उसे "अटकण" कहते हैं। अगर ऐसा तय कर लिया कि "कड़वी दवाई नहीं पीऊँगा" तो फिर वह बात दिमाग़ में घूमने लगती है और दवाई नहीं पी पाते। यह भी "अटकण" है। अंबालाल भाई प्रेम से समझा-बुझाकर सभी को इस प्रकार की मानसिक मान्यता रूपी "अटकण" में से छुड़वाते।

एक बार एफीडेविट (कानूनी) पत्र के लिए कोर्ट जाना हुआ। उनके साथ उनके भागीदार भी थे। उधर पैसिज में एक दरवाज़े से दूसरे तक बहुत सारे वकील खड़े थे।
यहाँ आइए।
मुझे बताइए क्या काम है?
अरे, भाई! मेरे पास आइए न!
अंबालाल भाई तो आश्चर्यचकित हो गए।
मेरे पास आइए, बताइए क्या करना है?
यह कैसा धंधा? ग्राहक के लिए इतनी छीना-झपटी? होटलवाले भी इस तरह से ग्राहक नहीं बुलाते? यहाँ तो एक छोटे से काम के लिए भी सभी एक साथ टूट पड़े।
देखो! एक रुपया मिलेगा।
नहीं, नहीं दो रूपये दीजिए न!

भागीदार ने उस वकील के साथ मिलकर कागज़ात का काम पूरा किया। वह वकील पैसों के लिए पीछे-पीछे आने लगा।

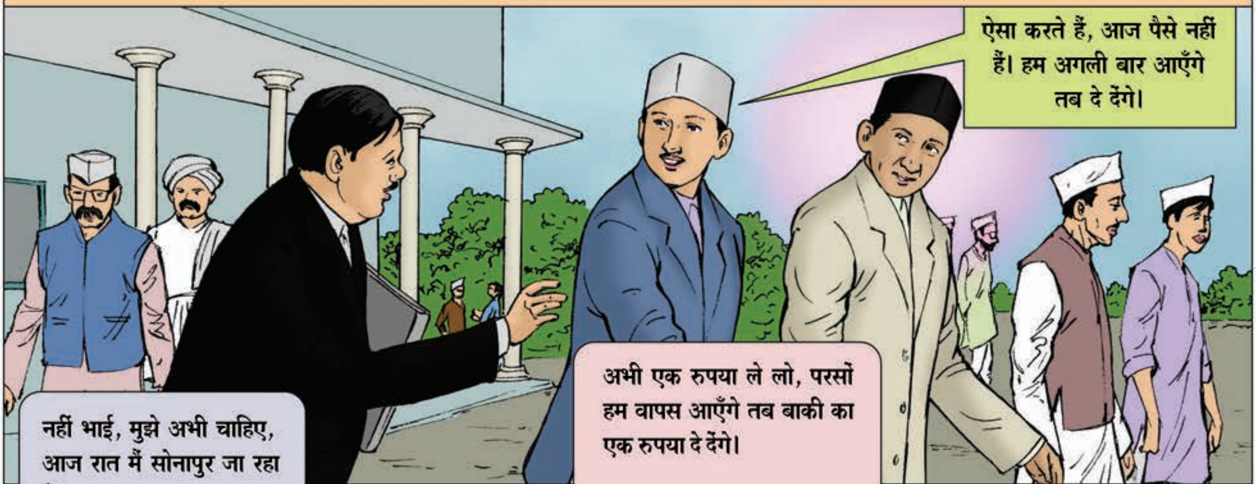

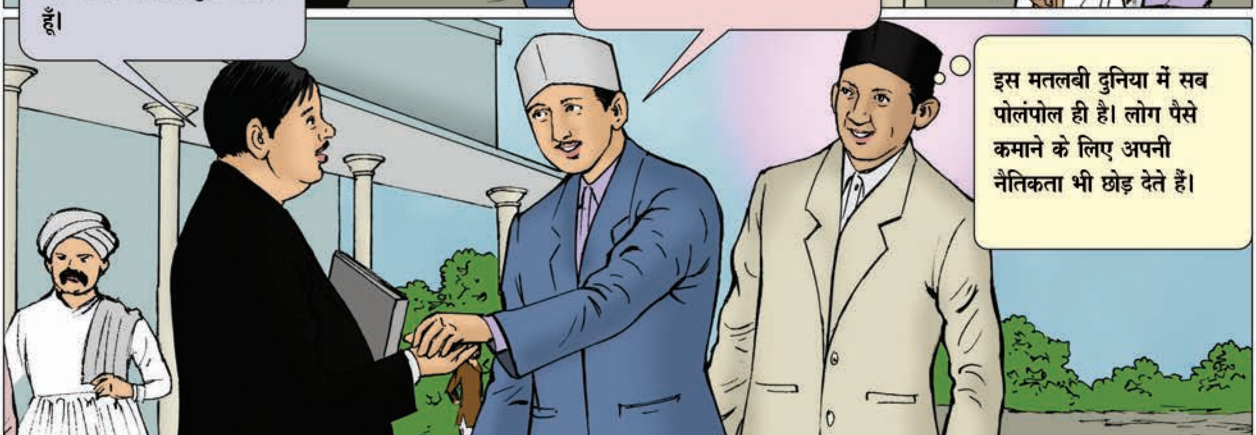

अंबालाल भाई के भागीदार भी कच्चे खिलाड़ी नहीं थे। उन्हें इस तरह पीछे पड़नेवाले लोगों से काम निकलवाना अच्छी तरह से आता था। व्यवसाय के काफी सिरफोड़ीवाले काम वे ही कर लेते थे। ऐसे समय में अंबालाल भाई दुनिया के लोगों के इस तरह के व्यवहार का सूक्ष्मता से निरिक्षण करते और निर्लेप रहकर सार निकालते थे।

अरे अंबालाल, मैं एक नई ★"ईज़ी चेयर" लाया हूँ।
अच्छा? फिर तो मैं आपके यहाँ आऊँगा देखने।
अंबालाल भाई उस सेठ के घर गए। उस वक्त वे अपनी नयी ईज़ी चेयर पर बैठे हुए थे। वे कुछ परेशान दिख रहे थे।
अरे सेठ जी इतनी अच्छी ईज़ी चेयर है, फिर भी आप इतने अनईज़ी क्यों दिख रहे हैं?
क्या करूँ अंबालाल भाई, व्यापार के विचारों में खो गया था।
अंबालाल भाई और उनके भागीदार बारी-बारी से उस कुर्सी पर बैठे। अच्छी खासी आगे-पीछे झूलनेवाली कुर्सी थी। दोनों को भा गई।

★ ईज़ी चेयर - कुर्सी

आखिर में नवसारी में उन्होंने ऐसा कारीगर ढूँढ निकाला जो ऐसी ईज़ी चेयर बना सके। कारीगर ने हूबहू वैसी ही ईज़ी चेयर बनाकर अंबालाल भाई के घर पहुँचा दी।
अंबालाल भाई ने उसे अच्छी तरह से परखा, आगे-पीछे झूलते हुए उसमें पिंडलियों की मालिश भी हो रही थी। जिससे थकान उतर जाए।
अंबालाल ने खुश होकर अपने भागीदार को भी वह कुर्सी दिखाई
कांति भाई उस कुर्सी पर बैठे लेकिन कुछ खयालों में खो गए हों, ऐसा लगा।
क्या आप भी कांति भाई? कुछ देर के लिए रखो न व्यापार को एक तरफ, कितनी अच्छी ईज़ी चेयर है! आप क्यों अनईज़ी होकर बैठे हो? कुर्सी पर बैठे हो, तब तक तो आराम से झूला खाओ। व्यापार में नुकसान होगा तो वह तो खाता-बही का है। अभी कुर्सी पर बैठे क्या नुकसान है? इससे तो कुर्सी को भी बुरा लगेगा कि यह कैसा आदमी जिसने मुझे ही अनईज़ी कर दिया!
व्यापार की लेन-देन, नफा-नुकसान और उससे संबंधित अनेक संयोग मनुष्य को भूतकाल या भविष्य काल में ले जाकर वर्तमान में प्राप्त सुख-समृद्धि को भी पूरी तरह से भोगने नहीं देते, इसलिए फिर वे कहते थे कि प्राप्त को भुगतो और अप्राप्त की चिंता मत करो।

★ अनईजी - बेचैन

अंबालाल भाई को जब तक ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ था तब तक वे भी अहंकार के शिकार थे ही। उनका अहंकार दुःख सहन करने में कितना "मज़बूत" था, वह जानना है?

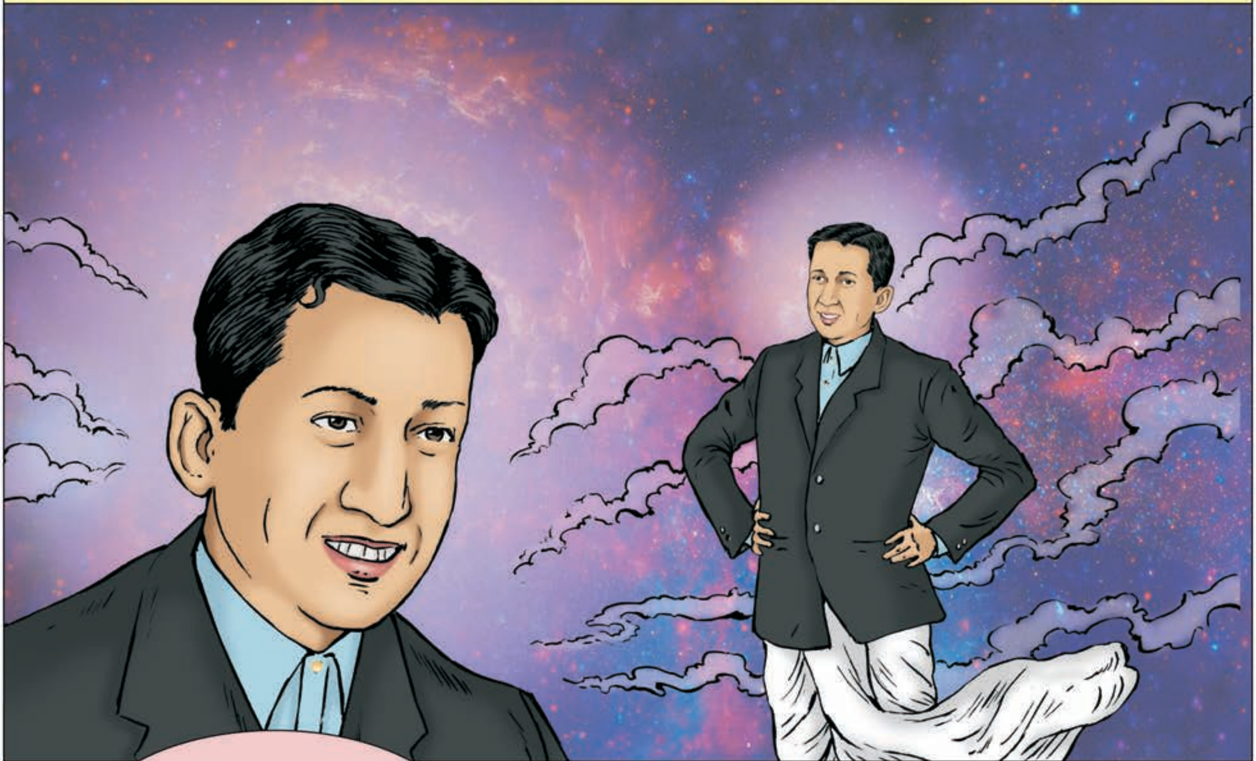

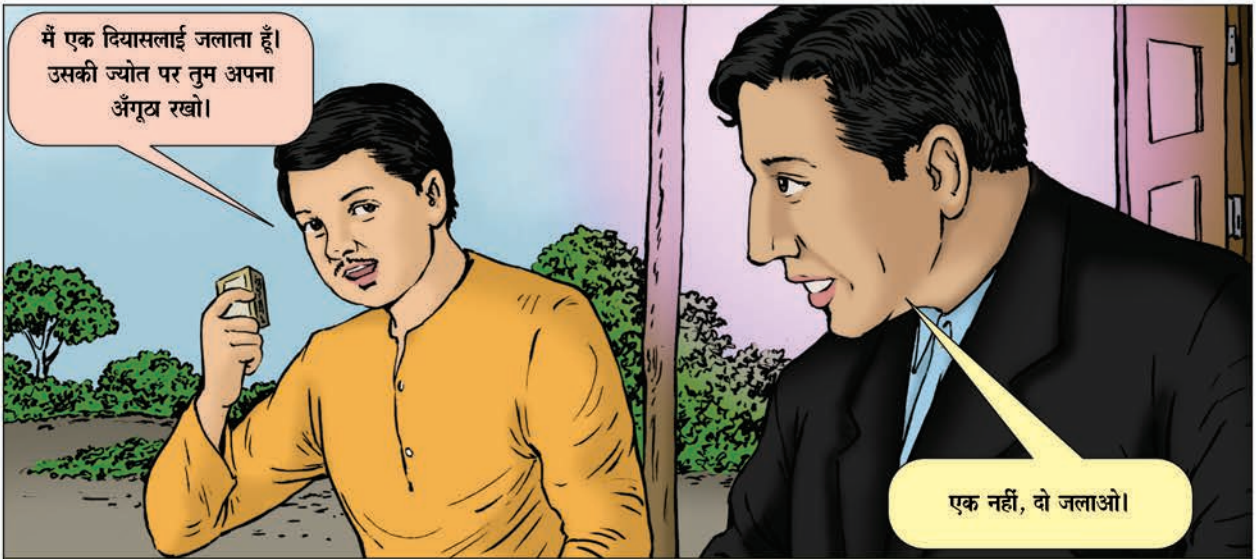

उस मित्र को लगा कि पल भर में ही अंबालाल अपना हाथ खींच लेंगे, लेकिन अंबालाल ने तो दोनों दियासलाई के खत्म होने तक अँगूठा नहीं हटाया। यह देख उनका मित्र घबरा गया।

वास्तव में इसे सहन शक्ति नहीं कहते, बल्कि "अहंकार" का फल कहते हैं। यदि हम ज्ञान और सही समझ को हाज़िर रखें तो कभी भी सहना नहीं पड़ेगा। जिसका अहंकार (इगोइज़म) जितना बड़ा होता है उसे उतने ही दुःख और भोगवटे सहने पड़ते हैं, लेकिन वह सही रास्ता नहीं है। फिर बदले में दुःख सहन करना पड़ता है।

अंबालाल भाई के मित्र शिवा भाई बनियों की एक सोसाईटी में रहते थे। एक बार उन्हें काफी परेशानी आ पड़ी। वे एक वकील के घर में किराए पर रहते थे। वकील ने उन्हें घर खाली करने को कहा। शिवा भाई उसके लिए तैयार नहीं हुए, इसलिए वकील ने उन पर दावा कर दिया। अंबालाल भाई की मदद से वकील के साथ यह समझौता हुआ कि दो या तीन साल शिवा भाई उस घर में रह सकते हैं, लेकिन उसके बाद घर खाली करके वकील को सुपुर्द कर देंगे।परेशानी का अच्छी तरह हल निकल गया और वकील ने यह बात कागज़ पर लिख कर दी।

इस बात को छः महीने भी नहीं बीते होंगे कि अचानक एक दिन शिवा भाई की बेटी दौड़ती-हाँफती अंबालाल भाई के पास आई।

★ बेलिफ - ज़ब्ती करवानेवाले सरकारी अफसर

अंबालाल भाई की क्षत्रियता भभक उठी। आँखों में अलग ही तरह की चमक थी जैसे प्रत्यक्ष शिवजी प्रकट न हुए हों!

वकील तो ठंडे कलेजे से खड़ा था।

वह काग़ज़ हाथ में लेकर...

ऐसा कहते-कहते उसने काग़ज़ को मरोड़कर सीधा अपने मुँह में डाला और अंबालाल भाई की नज़रों के सामने उसे निगल गया।

* सनद - वकालत करने का लाइसेन्स

एक बार अंबालाल भाई अपने मित्र के साथ मथुरा गए। मथुरा तो श्री कृष्ण की भूमि, इसलिए वहाँ के दर्शन का बहुत महत्व है, लेकिन ऐसे स्थानों पर चौबे★ (ब्राह्मण की एक ज्ञाति) मिल जाते हैं।

(पहले के ज़माने में यात्री होटल या धर्मशाला में नहीं ठहरते थे, बल्कि किसी ब्राह्मण के घर रहते थे और वही ब्राह्मण भगवान की पूजा और विधि करवाते। लौटते वक्त वह यात्री उसे मोटी दक्षिणा देता और फिर हर साल दान-धर्म के पैसे भेजता।)

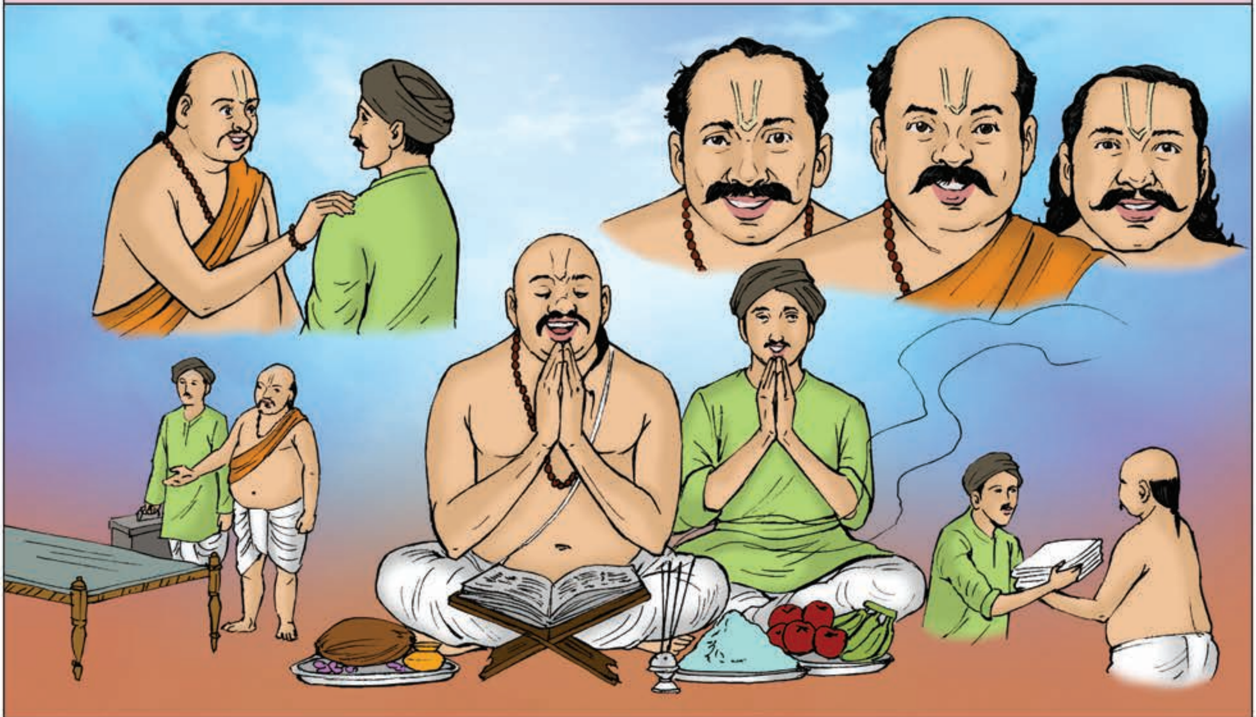

अंबालाल भाई मथुरा स्टेशन पर जैसे ही ट्रेन से उतरे, उन्हें चौबों ने घेर लिया।

★चोबा - मथुरा के पंडितों की एक जाति

ऐसा कहकर उस चौबे ने अंबालाल भाई का हाथ पकड़ लिया। खुद के खाते में से अंबालाल भाई के फादर, मदर दोनों का नाम ढूँढ निकाला और कहा कि जब वे यहाँ दर्शन के लिए आए थे, तब उन्हीं के यहाँ ठहरे थे।

★ चिपकू - अपने स्वार्थ के लिए सामनेवाले से किसी भी तरह गले पड़ना

किसी भी तरह से अपनी स्वतंत्रता खोने नहीं देते थे और वह भी दुःख दिए बगैर.... इस तरह चाहे कैसे भी प्रसंग में युक्ति लगाकर मुसीबत में रास्ता निकाल लेते।

अंबालाल भाई श्रीमद राजचंद्र के मंदिर में दर्शन करने "अगास" गए थे। साधारणतः ऐसे धार्मिक स्थलों पर दर्शनार्थी अपनी तरफ से मंदिर के अलग-अलग खर्चों में, अपने योगदान के रूप में पैसे का दान लिखवाते हैं। अंबालाल भाई का उन दिनों कॉन्ट्रैक्ट का धंधा काफी अच्छा चल रहा था, उनके पास पैसों की कोई कमी नहीं थी। वे भी कार्यालय में कुछ दान लिखवाने गए।
यह लीजिए १०० रु का नोट। हमारी तरफ से मंदिर के खर्च के लिए २५ रुपये लिखो और ७५ रुपये वापस देना।
उस ज़माने के २५ रुपये मतलब आज के २५०० रुपये के बराबर थे!
मंदिर में धर्म के लिए पैसे देने थे और पैसों की कोई कमी नहीं थी, फिर भी वहाँ ज्यादा पैसे नहीं दे पाया। कैसी मेरी गाढ़ प्रकृति!!!
यों तो लोग मुझे बहुत उदार व्यक्ति की तरह जानते थे। भादरण में मंदिर बनवाने के लिए मैंने ७००० रुपया दन दिया था।

अपने स्वभाव का कितना निष्पक्षपाती और सटीक अवलोकन किया! वैसे उन्हें पैसों का कोई लोभ नहीं था, लेकिन फिर भी वाहवाही न मिले वहाँ पर पैसे देने में लोभ हो जाता था और जहाँ "वाहवाही" मिलती, वहाँ लखों रुपये भी खर्च कर देते। जैसे ही उन्होंने अपनी कीर्ति के मोह को पहचाना वैसे ही उनका वह मोह चला ग्य!

अंबालालभाई का स्वभाव दिलदार था। यदि किसी को पैसे की तंगी होती और जीवन-निर्वाह में ज्यादा तकलीफ हो, तब उसकी मदद के लिए झट से पैसे दे देते थे। वे हिचकिचाते नहीं थे। एक बार ऐसे किसी एक व्यापारी की मुसीबत में उन्होंने पाँच सौ रूपये की मदद की थी।

कुछ समय बाद उन्होंने उस व्यापारी से सहजरूप से पैसे वापस माँगे, तब उन्हें अचानक ही बहुत कठोर अनुभव हुआ था।
लाओ, आज इसी रास्ते से गुज़र रहा हूँ तो राम जी भाई से मिलता जाऊँ। उनकी दुकान यहीं है न! अरे! हाँ, अच्छा याद आया, मैंने उनकी मुसीबत में पाँच सौ रूपये उधार दिए थे। शायद एक-दो साल हो गए होंगे। वे लौटा दें तो उस बात का अंत आ जाए।
कैसे हो राम जी भाई? आपका व्यवसाय कैसा चल रहा है?
आइए, आइए अंबालालभाई, बहुत दिनों बाद आज दिखे! बस देखिए, अभी तो भगवान की कृपा है! इस साल अच्छी आमदनी हुई है।
तो फिर यदि आपका निर्वाह हो रहा हो और कोई तकलीफ नहीं हो तो इस बार हिसाब पूरा कर देना।
क्या पूरा कर देना है?

पिछली बार आपने मुझ से पाँच सौ रूपये लिए थे न, उन्हें यदि लौटा दें तो हिसाब चुकता हो जाएगा।
अरे! कैसी बात कर रहे हैं, अंबालालभाई? मुझे कहाँ आपके रूपये लौटाने हैं? आप से कोई भूल हो रही है। पिछली बार तो आपने मुझ से पाँच सौ रूपये माँगे थे और मैने तब आपको उधार दिए थे। मुझे ऐसा लगा कि कभी न कभी तो आप लौटा ही देंगे, इसलिए मैं माँगने नहीं आया!
क्षणभर के लिए तो अंबालाल स्तब्ध ही रह गए! काटो तो खुन नहीं निकले, ऐसी उनकी स्थिति हो गई! किसी सामन्य व्यक्ति के जीवन में यदि ऐसा किस्सा हो जाए तो उसका अंजाम क्या आएगा? अंबालाल तो असामान्य व्यक्तित्व के मालिक थे। जब अचानक ही कोई आफत आ जाए तब उनके मन में सुल्टी विचारधारा शुरू हो जाती और उससे वे तुरंत ही स्वस्थता प्राप्त कर लेते थे।
आज तो बुरा फँसा! पैसे की उगाही करने जाना तो मुझे कभी भी अच्छा ही नहीं लगता, तो फिर आज कहाँ से ऐसा सूझा। यह भी मेरा ही हिसाब होगा न! वाद विवाद में तो कोई मज़ा नहीं है। ज़बरदस्त टकराव होगा और यदि सामनेवाली व्यक्ति को मन दुःख हो जाए ऐसा बोल दिया या वर्तन हो गया तो बैर बाँधे बगैर नहीं रहेगा। उसके साथ झगड़ा थोड़े ही कर सकता हूँ। ये पैसे आए या गए उससे मुझे कोई निस्बत नहीं है। उस बारे में मुझे चिंता करने की ज़रूरत ही नहीं है। मुझे तो किसी को दुःख न हो, किसी के साथ बैर न बँधे, इस तरह हल लाना है।

इस प्रसंग पर से अंबालालभाई सिख गए थे कि पैसे देने के बाद ऐसा ही समऐसे व्यक्ति के साथ तो कोई व्यवहार शुरू ही नहीं हो, वही अच्छा। इस तरह वे जान-बूझकर धोखा खाकर, संसार में भले ही नुकसान हों, लेकिन अपनी आध्यात्मिक प्रगति की भावना रखते थे।झ लेना कि काले कपड़े में बाँधकर समुद्र में डाल दिए। वापस आएँगे ऐसी आशा ही नहीं रखनी चाहिए।

अंबालालभाई के मामाजी के बेटे नडियाद में रहते थे। वे उम्र में इनसे पाँच साल छोटे थे और एन्जिनियर थे।
उनका जमाई एक बार नडियाद उनके घर आया था। सुबह जब वे ऑफिस जा रहे थे, उस वक्त उनका जमाई उनके पीछे आया और उनको पकड़ लिया।

मोहल्ले के रास्ते पर सब लोगों के बीच इस तरह बर्ताव करके उसने ससुर की इज्जत ले ली। कितनी ही नौकरियाँ उसे दिलाई होंगी, सभी जगह से खुद भाग जाता और फिर इस तरह ससुर के गले पड़ता! उस दिन तो पूरे मोहल्ले में सन्नाटा छा गया। शांत और सीधे व्यक्ति की ऐसी फजीहत। ये किस प्रकार का न्याय?

वे कोमल और नम्र स्वभाव के थे, इसलिए जमाई की ऐसी हरकतें सहन कर लेते थे। लेकिन उस दिन अंबालाल भाई ने जमाई का ऐसा बर्ताव देखा तो उनका पटेल का खुन खौल उठा।

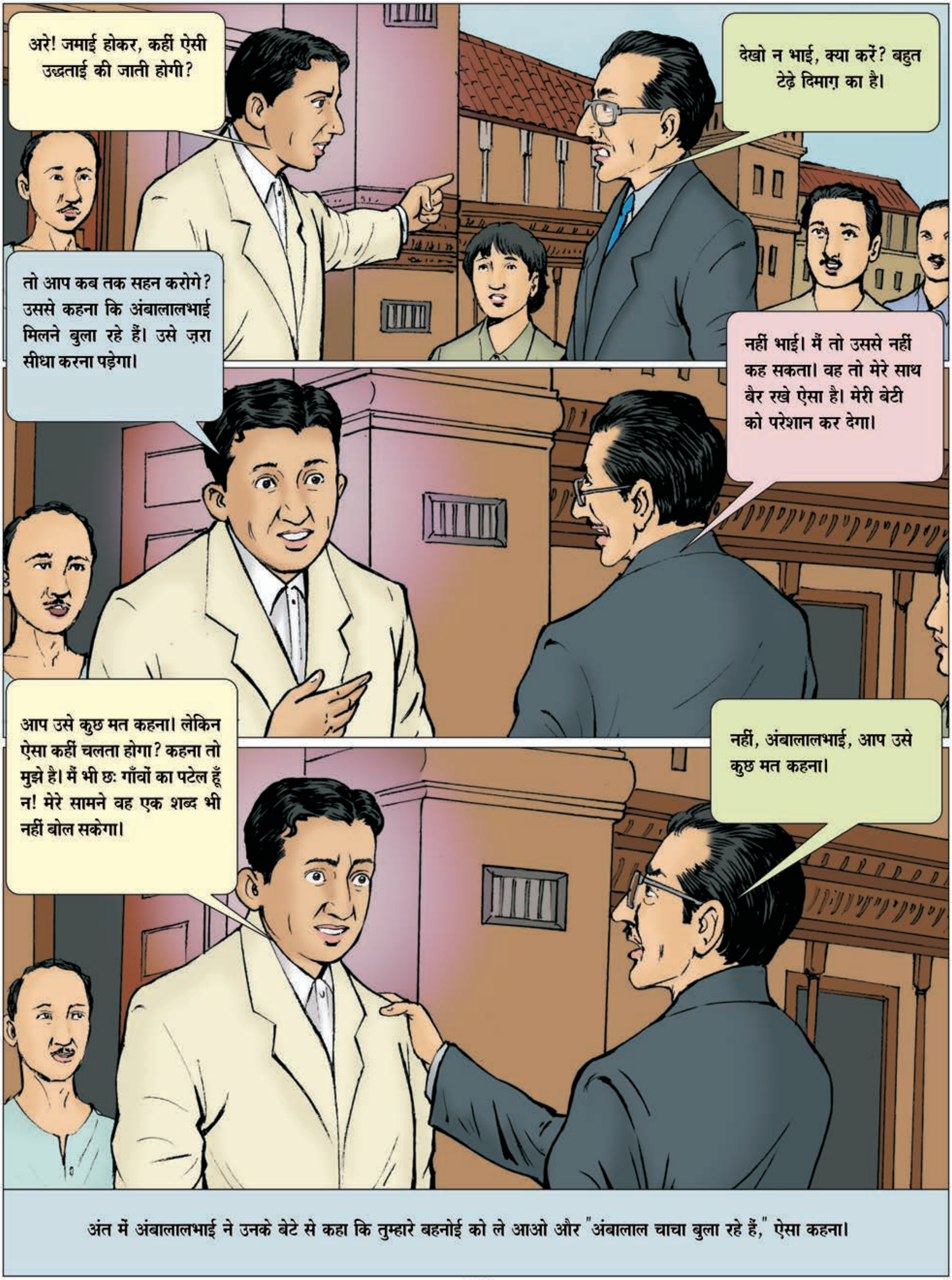
अरे! जमाई होकर, कहीं ऐसी उद्धताई की जाती होगी?
देखो न भाई, क्या करें? बहुत टेढ़े दिमाग़ का है।
तो आप कब तक सहन करोगे? उससे कहना कि अंबालालभाई मिलने बुला रहे हैं। उसे ज़रा सीधा करना पड़ेगा।
नहीं भाई। मैं तो उससे नहीं कह सकता। वह तो मेरे साथ बैर रखे ऐसा है। मेरी बेटी को परेशान कर देगा।
आप उसे कुछ मत कहना। लेकिन ऐसा कहीं चलता होगा? कहना तो मुझे है। मैं भी छः गाँवों का पटेल हूँ न! मेरे सामने वह एक शब्द भी नहीं बोल सकेगा।
नहीं, अंबालालभाई, आप उसे कुछ मत कहना।
अंत में अंबालालभाई ने उनके बेटे से कहा कि तुम्हारे बहनोई को ले आओ और "अंबालाल चाचा बुला रहे हैं," ऐसा कहना।

वे जमाईराज पधारे तब अंबालालभाई ने उसे कमरे में बुलाकर दरवाज़ा बंद कर दिया।

अंबालालभाई ने तो इतना सब कहकर जमाई को अच्छा खासा धमकाया। उसे तो ऐसे ही लगता था कि "मैं जमाई हूँ" इसलिए हर जगह रौब मार सकता हूँ। अंबालालभाई की बात सुनकर तो वह एकदम स्तब्ध रह गया। उसके बाद पूरी ज़िंदगी उद्धताई से एक शब्द भी नहीं बोल पाया! अंबालालभाई इस तरह अच्छे-अच्छों के ऊपर चढ़े हुए अहंकार को शांत (ठंडा) कर देते।

अंबालालभाई कहते, जिसे बेटी की शादी करनी हो, वे लोग ऐसी कठोर भाषा नहीं बोल सकते, क्योंकि फिर उनके घर की बेटी कोई नहीं लेगा। लेकिन अंबालालभाई को ऐसी कोई चिंता नहीं थी। उन्होंने तो उस जमाई के अहंकार के उफान को शांत करने का बीड़ा उठाया था।

कॉन्ट्रैक्ट का व्यवसाय था इसलिए अंबालालभाई को ज्यादातर कारीगरों से काम लेना पड़ता। अंबालालभाई का दिमाग़ इतना पावरफुल था कि एक मिनट में तो एकदम फास्ट, कितने ही रिवोल्युशन घूम जाते! इसलिए अंबालालभाई काम करवाले के लिए कारीगरों को जो निर्देश और समझ देते, वे इतनी तेज़ी से करते थे कि कारीगरों को उस बात को ग्रहण करने और समझने में बहुत देर लगती।

कारीगरों की धीमी गति और गलत फहमी के घोटाले उनसे सहन नहीं होते थे और कईबार अकुलाकर मज़दूरों को डाँट देते थे।

हृदय से नम्र और मानवमात्र के लिए सहृदयी व्यवहार रखनेवाले अंबालालभाई को खुद के ऐसे गुस्सेवाले बर्ताव के लिए बहुत ज्यादा पछतावा होता। उस पर बार-बार चिंतन करते।

ऐसा समझ में आने के बाद से अंबालालभाई कारीगरों के साथ व्यवहार में "काउन्टर पुली" (एडजस्टमेन्ट) रख देते और उन पर गुस्सा करना बंद कर दिया।

इस तरह "बॉस" बनने के बाद उन्होंने कभी भी अंडरहैन्ड कर्मचारियों को धमकाया नहीं था। बल्कि अंडरहैन्ड व्यक्तिओं को रक्षण देकर सभी का प्रेम और विश्वास प्राप्त किया था। उनसे किसी को डर नहीं लगे इस तरह समझदारीपूर्वक व्यवहार का हल लाते।

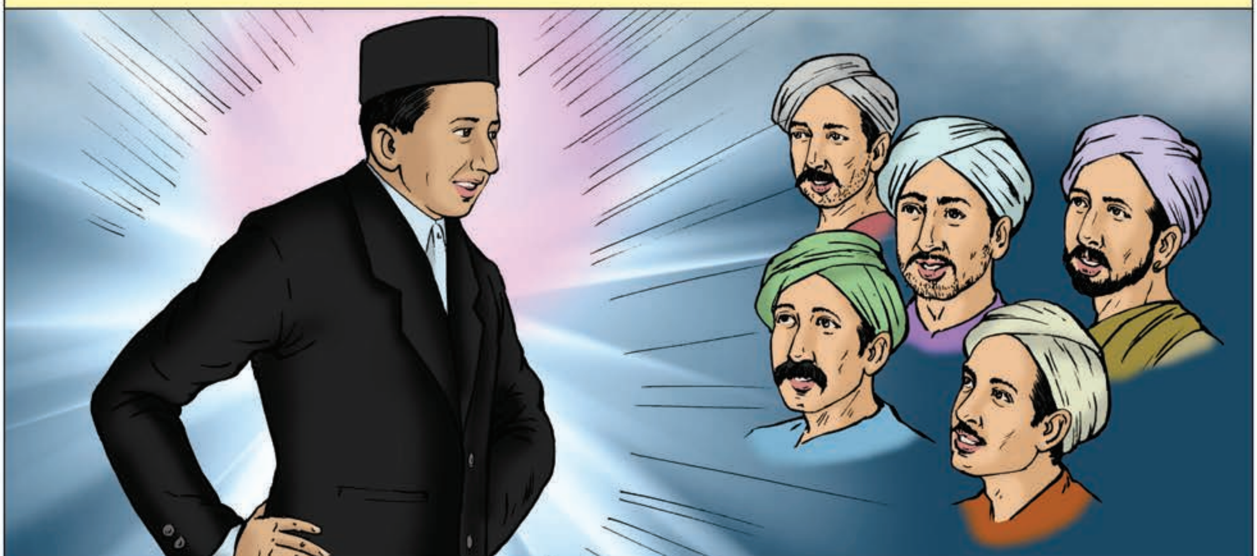

इस तरह, युवावस्था में अंबालालभाई (दादाश्री) के जीवन प्रसंगों पर से समझ में आता है कि उनका व्यवहार इतना उच्च और आदर्श था कि कैसे सामनेवाले को समझाकर, उसके साथ टकराए बगैर, एडजस्टमेन्ट लेकर लोगों को किसी भी तरह से मददगार हो सकें और सामनेवाले का दुःख दूर हो और उसे सुख मिले, यही उनके जीवन का लक्ष था। आगे चलकर ज्ञान के बाद यही चीज़ उनके जीवन में इस प्रकार परिणमित हुइ "जो सुख मुझे मिला, वह सारे संसार को प्राप्त हो।"

बालविज्ञान की अन्य प्रकाशित पुस्तकें

गुजराती और अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध

स्टोरी बुक

मन्थली मैगज़ीन

युवाओं के लिए
Akram youth

बच्चों के लिए
अक्रम एक्सप्रेस

दादा भगवान सचित्र

मानव में से महामानव (नील) सीरीज़ बुक

गेम्स

V.C.D. & D.V.D.

वेबसाइट

Visit kids.dadabhagwan.org

हर व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार के संयोग आते हैं और नित नए अनुभवों में से गुज़रना पड़ता है। लेकिन जिस प्रकार से ज्ञानी उन्हें हल करते हैं वह हमारे लिए एक बोध रूप बन जाता है। दादाश्री के जीवन प्रसंगों को देखें तो उन्होंने हर एक चीज़ को इस प्रकार हल किया कि किसी भी संयोग में किसी को दुःख न हो, इतना ही नहीं बल्कि सभी को किस प्रकार से सुख हो। उसकी झलक इस पुस्तिका में देखने मिलती है।

dadabhagwan.org

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

ISBN 978-93-82128-70-0
9 789382 128700 >
Printed in India
MRP ₹45